Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

ओडिशा के आत्मा का इशारा : अरविंद राय की कहानियों की धारा

डॉ. शरत कुमार जेना
असिस्टन्ट प्रोफेसर, ओड़िया विभाग, विश्व–भारती विश्वविद्यालय,शांतिनिकेतनए पश्चिम–बंगाल।

शोधसार– अरविंद राय की प्रत्येक कहानी आधुनिक जीवन का सूक्ष्म प्रतिबिंब है। उनके आख्यानों में जीवन के सही अर्थ को खोजने और जीवन के सार्थक पहलुओं को समझाने की असाधारण क्षमता है। एक मध्यमवर्गीय ओडिया परिवार के सपने और कल्पनाएँ, जीवन की थकान और उदासी, विरासत और संस्कृति के प्रति गहरा लगाव, आधुनिक शहरी जीवन की यांत्रिक दिनचर्या, राजनीतिक स्थिति पर व्यंग्य, पौराणिक कथाओं और इतिहास की पुनर्व्याख्या, लोक कथाओं का प्रयोग और सबसे बढ़कर ग्रामीण मानसिकता और अतीत के प्रति प्रेम उनकी कहानियों की विशेष पहलू हैं। उनकी कहानियाँ विषय–वस्तु, अंतर्वस्तु और रूप की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और सुंदर हैं। परिक्षण निरीक्षण के बहाने उन्होंने कभी भी कहानी को कहानी से दूर नहीं ले गए है या कहानी के गुणों को वर्जन नहीं किया, बल्कि किसी भी दृश्यमान साधारण घटना या वस्तु में असाधारण सत्ता को पहचानने और पहचान करवाने का प्रयास किया है। सामाजिक रूप से प्रासंगिक और भावनात्मक विषयवस्तु में नई सोच जोड़कर उन्होंने अपनी रचनात्मक शैलियों के माध्यम से कहानी के अर्थ को विस्तृत और व्यापक किया है।

मुख्य शब्द–अरविंद राय, आत्मा, इशारा, धारा, कहानी, ओडिशा, जीवन।

अरविन्द राय आधुनिक ओड़िया भाषा परंपरा के एक समृद्ध और प्रभावशाली कहानीकार हैं। उन्होंने 1980 के बाद के ओड़िया भाषा साहित्य को विस्तारित और अलंकृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी कहानियों का साम्राज्य जंगल में दूर–दूर तक फैले पत्तों और फूलों से भरे हरे–भरे बगीचे की तरह है। वे इस बगीचे में काम करने वाले एक ईमानदार, सौंदर्य–पिपासु और जागरूक माली हैं, जो अपनी दूरदर्शिता, व्यक्तित्व, जवाबदेही और जीवन–दृष्टि से अपने बगीचे को खिलने और सुगंधित करने में बहुत सफल रहे हैं। आधुनिक समाज, पारिवारिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन के सीमित और नाशवान रूप को देखकर वे जितने सचेत हुए हैं, उतने ही जागरूक भी हुए हैं और कहानियों के माध्यम से उन्होंने जीवन के सार्वकालिक और शाश्वत पहलू में अपनी गहरी आस्था को व्यक्त किए है। उनकी प्रत्येक कहानी आधुनिक जीवन का सूक्ष्म प्रतिबिंब है। उनके आख्यानों में जीवन के सही अर्थ को खोजने और जीवन के सार्थक पहलुओं को समझाने की असाधारण क्षमता है। एक मध्यमवर्गीय ओडिया परिवार के सपने और कल्पनाएँ, जीवन की थकान और उदासी, विरासत और संस्कृति के प्रति गहरा लगाव, आधुनिक शहरी जीवन की यांत्रिक दिनचर्या, राजनीतिक स्थिति पर व्यंग्य, पौराणिक कथाओं और इतिहास की पुनर्व्याख्या, लोक कथाओं का प्रयोग और सबसे बढ़कर ग्रामीण मानसिकता और अतीत के प्रति प्रेम उनकी कहानियों की विशेष पहलू हैं। आधुनिक समाज और जीवन के प्रति उनकी गहरी आस्था और विश्वास है। उन्होंने कहानी की हर साधारण घटना में जीवन के कई सार्थक पहलुओं को जीवंत और मूर्त रूप दिया है, साथ ही कहानी में वर्णित पात्रों के इर्द–गिर्द के कई अनकहे परिवेशों को भी जीवंत किया है। नब्बे दशक के बाद नई काल्पनिक युग की तेजी से विकास और वैश्वीकरण के प्रभाव,ओडिया कहानीकार कई परीक्षणों का सामना कर रहे थे और सभी अवास्तविक और शैलीविहीन हो रहे थे। हालाँकि, कहानीकार अरविन्द राय ने कथात्मकता और परिवेश के महत्व को अधिक

महत्व देकर, खुद को मनोज–चंद्रशेखर–शांतनु की अगली पीढ़ी के कहानीकार के रूप में अपने आपको स्थापित किया।

जगतसिंहपुर जिले के बिरदी प्रखंड के बरदिया गांव में जन्मे अरविंद ने अपना बचपन और किशोरावस्था प्रकृति की गोद में बिताया। गांव के धान के खेत, बरगद का पेड़, शिव जी का मंदिर, रात की अंधेरी छाया में खिले फूलों और पेड़ों का संगीतमय वातावरण, बागुड़ी खेल, मकान, तालाब , ठकुरानी मैदान आदि सब उनका बचपन के चरागाह था। वह वहां के बच्चों के दिल से एक हो गए है। वे वहाँ बारिश में भीगे और गर्मी में झुलसे। प्राकृतिक वातावरण के साथ–साथ पिछली पीढ़ी की सांस्कृतिक प्रवृत्तियां उनमें घुल–मिल गईं। अरविंद के दादा भ्रमरवर राय के संगीत और साहित्य साधना ने शुरू से ही बालक अरविंद को प्रेरित किया। उनके मन में उनकी तरह काव्य रचना करने की गहरी इच्छा थी। 1979 में मैट्रिक पास करने के बाद जगतसिंहपुर कॉलेज में पढ़ते समय वे श्अभ्युदय साहित्य समाजश के संपर्क में आए और उन्हे कई ओड़िया कथा लेखकों को पढ़ने का अवसर मिला। वहीं से उनके अंदर पनप रहे कहानी के बीज ने पहली बार श्मारुबालीश पत्रिका में श्साउकिर इतिकथाश नाम से अपने पंख फैलाए। तब से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। कहानी और उपन्यासों के माध्यम से वे ओडिया साहित्य जगत में अपनी पहचान बनाने में सफल रहे हैं।कहानी संग्रह जैसे 'अंतरंग मणिष', 'दृश्य बदलुछि', 'छाया लेउटाणि', 'बाट बसाघर', 'अंधार जेमिति आलुआ सेतिकि', 'सांनारे सकाल', 'पवनार खेल', 'आक्टर', 'गायक', 'मणिष कंढ़ेइ', 'निर्भया', 'जोकर', 'चंद्रकलार चिठि' और उपन्यास जैसे 'चाल फेरि जीबा', 'बढिला नइ', 'गोलम नगर घोडा', 'हे महाजीवन', 'बस्ती' आदि उनकी साहित्यिक प्रतिभा के सशक्त हस्ताक्षर हैं।

कहानीकार अरविंद राय की कहानियों का विषयवस्तु आधुनिक समय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कहानीकार राय ने तत्कालीन समाज की अनगिनत घटनाओं में से कुछ को इतनी कुशलता से जोड़ा है कि कहानी संरचना की प्रस्तुति शैली ने अनूठी संभावनाएँ पैदा कर दी हैं। प्रत्येक कहानी में कहानीकार का जीवन अनुभव कहानी के तत्वों के लिए खुराक प्रदान करता है। कहानीकार पहले अपना उद्देश्य या लक्ष्य निर्धारित करता है और फिर कहानी शुरू करता है। कहानीकार का उद्देश्य जितना महत्वपूर्ण होगा, कहानी लेखन के क्षेत्र में कहानीकार उतना ही सफल होगा। अरविंद की कहानियों में जो पहलू सबसे अधिक आकर्षित करता है, वह है ऐतिहासिक मानसिकता। अरविंद राय की कहानियों की आत्मा समकालीन वास्तविकता से जुडे होने के बावजूद हमारे इतिहास और परंपरा की वाहक बन गई है। जहां भावनाओं के प्रवाह की मूल भावनायों ने भूमि, संस्कृति और जीवन की संपूर्णता को बहुत करीब से जकड़ लिया है। अस्सी के दशक से पहले की ओड़िया कहानियों में संस्कृति और इतिहास के प्रेम में कई सहज प्रयोग और प्रचार–प्रसार हुए हैं। हालांकि अरविंद ने आधुनिक मूल्यों के महिमामंडन में इतिहास और संस्कृति को बचाने और उसे नए तरीके से कल्पित करने की कोशिश की है। अपनी कहानी रचना के शुरुआत से ही वे इस पहलू के प्रति काफी सजग और सचेत रहे हैं।

एक जाति अपने अतीत की महान घटनाओं और महान कार्यों पर गर्व करता है। जो घटनाएं लोगों के मन में हमेशा के लिए छाप छोड़ जाती हैं, वे जीवन के हर क्षण में मन में अंकित हो जाती हैं। वे अपने स्वयं के इतिहास, संस्कृति और परंपरा के लचीले तत्वों से भरी होती हैं। ये तत्व एक जाति के अस्मिता के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं और हमेशा के लिए व्यक्ति सत्ता में स्मृति बन जाती हैं। इसीलिए अतीत को किसी जाति की आत्म–पहचान या आत्म–शक्ति कहा जाता है। कहानीकार अरविंद की कहानियों की भावनात्मक सामग्री का केंद्र बिंदु पुरानी यादें हैं। बचपन के क्षणभंगुर अनुभव, ग्रामीण जीवन की सरल और शांतिपूर्ण जीवनशैली, प्रकृति की सुंदरता आदि, अधिकांश कहानियों में व्यक्त की गई हैं। ऐसा लगता है जैसे वह अपने

दिल के किसी एकांत कोने में उनके लिए अपना अंतरंग स्नेह को समर्पित करके याद कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने अपनी वाणी में हर जगह अतीत के प्रति अपनी उदासीनता का वर्णन किया है।

21वीं सदी में विज्ञान और तकनीक के प्रभाव और प्रसार के कारण यांत्रिक सभ्यता का विकास हो रहा है, परंतु पारंपरिक और मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। इसलिए आज के कहानीकार ने एक बहुत बड़े अंतर्विरोध के साथ खड़े होकर विरासत, संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को दिखाने की कोशिश की है। अस्सीके दशक के बाद के समय के कहानीकार अरविंद के कहानी की चेतना भी उस रचना में प्रबुद्ध और गतिशील है। इसीलिए उन्होंने अपनी मिट्टी को, ममता को, विरासत को और सामाजिक संबंधों को याद किया है। वह अपने बचपन को याद कर रहे हैं। उन्हें उस युग की यातना नहीं बल्कि समाज की समस्याएं, दुख–सुख, व्यवहार, रीति–रिवाज, परंपराएं आदि समस्यायें उन्हे याद आ रही है। इसलिए वह उन सबको वहीं तलाश किए है। जिनके साथ वे कभी देवी नदी किनारे, मवेशियों के झुंड में, त्योहारों में और तीर्थयात्राओं में थे। इसीलिए उनकी कहानियों में ओड़िआ संस्कृति और परंपरा के प्रति गहरा सम्मान है। अपनी मिट्टी के प्रति मोह, पारिवारिक प्रेम, ग्रामीण परिवेश की चित्र में खुद की संस्कृति और परंपरा के प्रति ध्यानपूर्वक ओडिशा के संस्कृतिक जीवन स्वरूप को वह दिखने की कोशिश किए है।

कहानीकार अरविंद के मन में कला और कलाकारों के प्रति गहरा सम्मान है। उन दिनों जिस तरह से कलाकारों का अनादर और बड़ों की अवमानना की जा रही थी, उससे वह दुखी है। एक संस्कृति संपन्न और कलाकार परिवार के वारिस रूप में, वह कलाकारों के प्रति सहानुभूति दिखाए है। श्गायकश कहानी का नायक एक युवा "पाला" गायक है, जिसने अपने जीवन को कला को समर्पित कर दिया है। कहानी दिखाती है कि उसका परिपक्व उम्र कितना दुखद और दयनीय हो गया है। कहानी में तत्कालीन समय के सरकार और राजनेताओं के घृणापूर्ण व्यवहार, कला के प्रति लोगों की उदासीनता, परिवार के लोगों का घृणापूर्ण व्यवहार आदि को दर्शाती है। इसी तरह, श्योगीबेशश कहानी बादिपाला मंडप की घटनाओं और यादों पर आधारित है। अतीत में गाँव की विद्वान मंडली किस प्रकार पाला नृत्य के माध्यम से पुराणों के अनेक उपाख्यानों पर चर्चा करते थे इसका जीवंत चित्र इसमें देखा जा सकता है।

इसी तरह, श्पवन र खेलश कहानी विलुप्त हो चुकी लोक कला श्मुंडपोता केला नृत्यश विषयवस्तु पर आधारित है। ओडिशा के खोरधा, नयागढ़ और गंजाम क्षेत्रों में केला समुदाय के आदिवासी गांव–गांव घूमकर पशु नृत्य परिवेषण करते थे। अंत में वे जमीन में गड्ढा खोदते और उसमें अपना सिर डालकर लंबे समय तक रहते। उनके पास हवा को नियंत्रित करने की शक्ति थी। वे लंबे समय तक जमीन के नीचे दबे रहते और लोगों से सहानुभूति और थोड़ी–बहुत भीख या मदद प्राप्त करते। यह उनके जीवन का हिस्सा था। वे अपने समुदाय को योगी मानते थे और यह परंपरा पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही थी। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव के कारण ऐसी प्रदर्शनकारी कला धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। श्पवन र खेलश कहानी ऐसी ही एक विलुप्त लोक कला का आश्रय लिया है।

नारी के प्रति सम्मान दर्शाने और नारी को सशक्त बनाने में अरविंद ने अपना सशक्त पक्ष अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। 'अंधार जेतिकि आलुअ सेतिकि' कहानी इसका ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने कहानी की नायिका 'रानु मिश्रा' को आत्मविश्वास और दृढ़ मनोबल प्रदान किया है तथा उसे द्रौपदी की भूमिका में ढाला है, जहाँ कालिया जेना जैसे अभिमानी आदमी का अहंकार चूर चूर हुआ। 'देवीदर्शन' कहानी में अरविंद की नारी ने संहार का रूप लिया है। 'शेष नानाबाया गीत' कहानी में उन्होंने नारी की यौन चेतना का विश्लेषण किया है। नारी केवल यौन इच्छाओं को मिटाने का साधन नहीं है, बल्कि उसने अपने अप्राप्य मातृत्व के रूप को खोज निकाला है। उन्होंने हमारे सामाजिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक जीवन की मर्यादाओं के भीतर नारी मन के उन्मुक्त रूप को उजागर किया है।

समकालीन कहानियों में सामाजिक जीवन की यथार्थ छवि जितनी प्रतिबिंबित होती है, उतनी ही मनुष्य के मनोविज्ञान एवं अवचेतन मन की प्रकृति का विश्लेषण भी होता है। आधुनिक कहानीकार का चारागाह मानव मन है। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड के मतानुसार "मानव मन में उत्पन्न होने वाले प्रेम, संदेह, ईर्ष्या, उदासी, अवसाद एवं विवशता उसके अवचेतन में निर्मित होते हैं। अतरू अकारण ही बिखरे विचारों एवं विकृत कल्पनाओं के कारण व्यक्ति अवसादग्रस्त हो जाता है।" कहानीकार अरविंद राय ने व्यक्ति के सामान्य जीवन में मानव मन एवं उसके अवचेतन की प्रकृति को दिखाने का प्रयास किया है। श्मोहश कहानी में नायिका सुनंदा की मनोविश्लेषण का बहुत ही स्पष्ट चित्रण किया गया है। विवाह के मात्र दो वर्ष पश्चात पति जयंत के गायब हो जाने पर उसने हिम्मत नहीं हारी तथा अपनी ससुराल में बहू का कर्तव्य निभाया। जयंत को वापस लाने के लिए उसने तमाम तरह के अनुष्ठान एवं टोने–टोटके किए थे। परंतु वह लापता था। अचानक सुनने को मिला कि जयंत की लाश अलका घाट पर पड़ी है, सुनंदा का मन स्तब्ध रह गया। अपने छोटे बेटे के मासूम चेहरे को देखकर वह बार–बार उम्मीद की किरण ढूंढ़ती और इस बात से इनकार करती कि यह लाश जयंत की नहीं है। अरविन्द की कहानी विविध पात्रों का एक चित्रशाला है। जिस प्रकार शिल्पी की तुली से एक निर्जीव मूर्ति सजीव हो जाती है, उसी प्रकार अरविन्द ने जिस पात्र को कहानी में स्थान दिया है, वह सशक्त और सजीव हो गया है। उनकी कहानियों के पात्र कहानी को इस तरह पकड़ते हैं कि पाठक पात्रों के माध्यम से कहानी का रस आस्वादन करता है। उन्होंने चरित्र चित्रण में कोई सीमा नहीं खींची है। बचपन की यादों में आने वाली ग्रामीण पात्रों से लेकर उन्होंने सहरी चरित्र, युवा, वृद्ध, अनपढ़ आदि सभी को स्वीकार किया है।

हर कहानीकार की अपनी एक अलग शैली होती है। जो उसके लेखन के अभिव्यक्ति शैली में देखने को मिलती है। कहानीकार अरविंद राय की कहानी एक ऐसी साधारण घटना से शुरू होती है जो पाठक को आकर्षित करती है। कभी–कभी एक छोटे रोचक वाक्य से शुरू होने वाली कहानी पाठक को अधिक आकर्षित करती है। ऐसी चुंबकीय शुरुआत कहानी कला की एक अनूठी तकनीक है जिसका इस्तेमाल बहुत कम ओडिया कथा लेखकों ने किया है।

कहानीकार अरविन्द की कहानी की भाषा और शैली बहुत उच्च कोटि की है। उन्होंने पात्र के लिए उपयोगी भाषा के माध्यम से भाववस्तु के साथ चरित्रों को पाठकों के अधिक निकटतर कर पाए है। कुछ कहानियों में आम ग्रामीण क्षेत्र के अल्पशिक्षित और अशिक्षित लोगों की भाषा का प्रयोग किया है। भाषा प्रयोग के क्षेत्र में उनकी विशिष्टता यह है कि उन्होंने उच्चारण के अनुसार शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, किए क्यों , महाप्रू, दिह, ठाकुर पठाइछँति,भारीआइलुणु,कुलिअन्ना, शाहे टंका, मूँ प्रा पचारुची, रमाइना,सीआदे, दरकार – आदि सैकड़ों शब्द दैनिक लोकभाषा के प्रयोग से उनकी कहानी पाठक के हृदय को छू जाती हैं। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अनेक शब्दों का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, चंगू बाजुथाए– फटर फट, फटर फट, झणर फट, झपट मात, फटर फट, घूम घूम, फटर फटा और धुडुकी के आवाज– त्यू क्यू त्यू क्यू आदि। उनकी कहानियों की विषयवस्तु और पात्र भाषा को बड़े ही जोश और आत्मीयता के साथ बांध कर रखते हैं। कहानीकार गौरहरी दास के मतानुसार दृ "अरविंद की कहानी में शब्द रूपी ईंटों को आवेग के साथ थामे हुए हैं। यह पाठक के हृदय को अपने में समाहित कर लेती है। उसका बेचौन मन एक बिंदु पर स्थिर हो जाता है।"

कुल मिलाकर यह विदित है कि कहानीकार अरविंद राय ओड़िआ साहित्य के सफल कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ विषय–वस्तु, अंतर्वस्तु और रूप की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और सुंदर हैं। परिक्षण निरीक्षण के बहाने उन्होंने कभी भी कहानी को कहानी से दूर नहीं ले गए है या कहानी के गुणों को वर्जन नहीं किया, बल्कि किसी भी दृश्यमान साधारण घटना या वस्तु में असाधारण सत्ता को पहचानने और पहचान करवाने का

प्रयास किया है। सामाजिक रूप से प्रासंगिक और भावनात्मक विषयवस्तु में नई सोच जोड़कर उन्होंने अपनी रचनात्मक शैलियों के माध्यम से कहानी के अर्थ को विस्तृत और व्यापक किया है। इसलिए समकालीन कहानीकारों के बीच अरविंद राय की भूमिका अद्वितीय और अनूठी है और उनकी कहानियाँ ओडिशा की आत्मा का प्रतीक हैं।

सहायक ग्रंथ सूची

1. खुंटिया, डॉ. ब्रह्मानंद, स्वतंत्रता परवर्त्ति प्रमुख गल्प स्रष्टा, कटक, तीसरा संस्करण, 2022।
2. सामल, वैष्णवरण, ओड़िया क्षुद्रगल्प र इतिवृत्ति की उत्पत्ति, फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक, प्रथम संस्करण, 2019।
3. बारिक, डॉ. कविता, शहे तेइस वर्ष र आधुनिक ऑडिया क्षुद्र गल्प एक तात्विक विश्लेषण, कटक, चौथा संस्करण, 2022।
4. सामल, डॉ. वैष्णवचरण, ओड़िया क्षुद्र गल्प र इतिहास, बुक्स एण्ड बुक्स, कटक, प्रथम संस्करण, 1990।
5. सामल, डॉ. वैष्णवचरण, ऑडिया गल्परू गति ओ प्रकृति, साथी महल, कटक, दूसरा संस्करण, 1991।
6. प्रधान, डॉ.कृष्णचंद्र ऑडिया कथा कल्पना र दिग ओ दिगंत, सत्यनारायण बुक स्टोर, कटक, प्रथम संस्करण, 2010।